## विचार बिन्दु

कला का अंतिम और सर्वोच्च ध्येय सौंदर्य है। –गेटे

# पत्रकारिता विश्वविद्यालय से छात्रों का मोह भंग

अब यह सवाल पूछने का समय आ गया है कि जब ठीक से नहीं चलाये जा सकते हैं तो विश्वविद्यालयों जैसे उच्च शिक्षा के संस्थान सरकार क्यों ताबड़-तोड़ स्थापित करती चली जाती है। शिक्षा के मंदिरों को अपवित्र करने का सत्ता में बैठे राजनेताओं को क्या अधिकार है? ऐसे हालात में मूल्य आधारित पत्रकारिता को उत्कृष्ट स्तर पर ले जाने के ध्येय से स्थापित हरिदेव जोशी पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय की दुर्गति देखना और भी अधिक दुखदायी है। विश्व विद्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध नए शिक्षा सत्र के लिए भर्ती हुए छात्रों की सूचियां इस त्रासदी की कहानी कहती हैं। विश्वविद्यालय मे पांच स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों –'प्रिन्ट मीडिया', 'इलेक्ट्रॉनिक मीडिया', 'मीडिया संगठन, विज्ञापन एवं जनसम्पर्क', 'सोशल मीडिया, और विकास-संचार', 'सामाजिक कार्य एवं एनजीओ'– की व्यवस्था है और प्रत्येक के लिए तीस-तीस सीटें निर्धारित हैं। मगर इस साल 'इलेक्ट्रानिक मीडिया' के पाठ्यक्रम में केवल सात, 'प्रिन्ट मीडिया', 'सोशल मीडिया और विकास-संचार, सामाजिक कार्य एवं एनजीओ' पाठ्यक्रमों में छह-छह तथा 'मीडिया संगठन,विज्ञापन और जनसम्पर्क' में केवल चार छात्रों ने एडमिशन लिया है। यह विश्वविद्यालय स्नातक कक्षाएं भी चलाता है जिसमें 120 सीटें है मगर इस बार इसमें केवल 21 छात्रों ने दाखिला लिया है। इनके अलावा यहां बीस-बीस सीटों के 'ब्रॉडकास्ट जर्नलिज़्म', 'फोटोग्राफी, और डेस्कटॉप पब्लिशिंग के तीन पीजी डिप्लोमा कोर्स और तीस सीटों वाला ग्राफिक्स एवं एनीमेशन का डिप्लोमा कोर्स भी है। इनके अलावा बीस सीटों वाला वीडियो एडिटिंग तथा तीस-तीस सीटों के व्यावहारिक हिन्दी, फंक्शनल इंग्लिश और विकास संचार के सर्टिफिकेट कोर्स भी यहां है। कैसी विडंबना है कि इन कोर्सों में किसी में भी कोई दाखिला लेने नहीं आया है। यह हाल उस संस्थान का है जिसके पीछे सरकार की ताकत है और जिसकी फीस बहुत ही मामूली है जिसमें कमजोर तथा आरक्षित श्रेणी के छात्रों के लिए शिक्षण शुल्क में पूरी छूट है। पिछले साल भी ऐसा ही हुआ था जिससे और तो कोई सबक नहीं लिया गया, केवल प्रवेश के लिए आवश्यक मेरिट परीक्षा की व्यवस्था नहीं लागू की गई। निर्धारित एक घंटे की 100 अंकों वाली प्रवेश परीक्षा जिसका विस्तृत पाठ्यक्रम बना हुआ है उसे पिछले सत्र में प्राप्त आवेदन और प्रवेश प्रतिशत तथा विद्यार्थियों की अत्यंत कम संख्या को देखते हुए नहीं कराने काइस विश्वविद्यालय को फैसला लेना पड़ा। ऐसा विश्वविद्यालय की विवरणिका में लिखा है।

पिछली बार इसी नाम का विश्वविद्यालय सरकार बदलने के बाद यह कहते हुए ही बंद किया गया था कि इस पर होने वाले खर्चों के मुकाबले बड़ी संख्या में छात्रों को फायदा होता नहीं दिख रहा है। वे ही स्थितियां फिर पैदा हो रही है। यह जानने के लिए किसी बड़े अनुसंधान की भी आवश्यकता नहीं है कि नया सरकारी विश्वविद्यालय की जड़ें जमें उससे पहले शैशव काल में ही वह पंगु हो कैसे हो गया। पत्रकारिता और जनसंचार के क्षेत्र में उच्च शिक्षा के इस नये संस्थान के भवन निर्माण की आधारशिला रखते हुए मुख्यमंत्री ने उसे अपना सपना बताया था। यह विश्वविद्यालय अपने परिचय में अभिमान से कहता है कि मीडिया और जनसंचार के लगातार बढ़ते हुए आकार, विविधता और अर्थ-बहुलता के दौर में राजस्थान सरकार द्वारा हरिदेव जोशी पत्रकारिता और जनसंचार विश्वऔविद्यालय (एचजेयू) की स्थापना को एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण क़दम के रूप में याद रखा जाएगा। इस विश्वविद्यालय की स्थापना के लिये राज्य विधानसभा में पारित कानून में इसका उद्देश्य अध्यापन, प्रशिक्षण और अनुसंधान के राष्ट्रीय केंद्र के रूप में विश्वविद्यालय को विकसित करना बताया गया। अब यह कितना याद रखा जाएगा और अपना कितना राष्ट्रीय स्वरूप बना पायेगा यह तो भविष्य के गर्भ में है किन्तु आज हालत यह है कि तीन साल पहले स्थापित हुए इस विश्वविद्यालय की तरफ छात्र आकर्षित नहीं हो रहे हैं।

**जिस प्रकार एक मैडिकल विश्वविद्यालय के साथ अस्पताल जरूर जुड़े होते हैं उसी प्रकार पत्रकारिता और जनसंचार के पेशे की शिक्षा और प्रशिक्षण के लिए मीडिया संस्थान इससे औपचारिक रूप से जुड़ें हों इस जरूरत पर कभी किसी ने नहीं सोचा। ऐसे में इस विश्वविद्यालय में दाखिल लेने छात्र क्यों कर आयें!**

विश्वविद्यालय का यह हाल इसलिए हुआ है कि वह राजनीति की बिसात पर मोहरा बन कर ही स्थापित हुआ। इसके पीछे वाह-वाही लूटने के अलावा कोई सोच नहीं थी। यदि कोई सोच होती तो उसका कानून सभी हितधारकों, खासकर मीडिया, जनसंचार एवं विकास के गैर-सरकारी संगठनों के साथ विमर्श कर के हुआ होता। सरकार ने उसी कानून की प्रतिलिपि तैयार कर विधानसभा में पास करवा ली जिसके तहत पिछली बार विश्वविद्यालय की दुर्गति हुई। वास्तव में इसकी स्थापना पिछली बीजेपी सरकार के फैसलों को बदलने के राजनैतिक कदमों के रूप में हुई। इतना जरूर हुआ कि पिछली बार की तरह इस बार भी पहला कुलपति मुख्यमंत्री की पसंद का कोई श्रमजीवी पत्रकार बनाया गया। उसे पुराने कानून का ढांचा दिया गया और पुरानी फेकल्टी का ऐसा तंत्र दिया गया जो पेशेवर पत्रकारिता और जनसंचार के किताबी ज्ञान की सुविधा क्षेत्र में ही नहीं बने रहना चाहता था बल्कि अपनी सुरक्षित सेवा के कारण अकड़ू भी था। बहुतों को आश्चर्य भी हुआ था कि नये विश्वविद्यालय में जब शिक्षकों की स्थाई नियुक्तियां ही नहीं हुई है तो यह फेकल्टी कहां से आ गई। विश्वविद्यालय नया था मगर शिक्षक पुराने थे। उनका चयन इस नए विश्वविद्यालय ने नहीं किया था। इसमें भी अजीब गोरखधंधा सामने आता है। ये स्थाई शिक्षक वे हैं जिनकी नियुक्तियां इसी नाम से पहले बनाए गए विश्वविद्यालय के दौरान हुई थी जो बाद में बंद कर दिया गया। जब इस नाम का पुराना विश्वविद्यालय विधानसभा में कानून पास करके बंद किया गया तब इन शिक्षकों को राजस्थान विश्वविद्यालय में भेज दिया गया भले ही उनकी नियुक्तियां उस विश्वविद्यालय ने नहीं की थी जहां उन्हें भेजा गया। राजस्थान विश्वविद्यालय के कानून में ऐसी कोई वैधानिक व्यवस्था भी नहीं है जिसमें उसके द्वारा चयननहीं किए गये शिक्षक वहां नियुक्त किए जा सकें। परंतु यह राठोड़ी हुई। जब पुराने नाम से नया विश्वविद्यालय बनाया गया तब नए कानून में लिख कर उनका स्थानांतरण राजस्थान विश्वविद्यालय से इस नए विश्वविद्यालय में कर दिया गया जिसने भी उनका चयन नहीं किया था। मेहरबान सरकार इन शिक्षकों की नौकरियों को बचाते हुए विश्वविद्यालयों की स्वायत्तता पर निर्मम प्रहार करती रही। इतना ही नहीं हर नए संस्थान में पिछले संस्थान में उनकी सेवा का काल जुड़ता रहा है जिससे वे आगे करियर एडवांसमेंट योजना में पदोन्नति पाते रहेंगे। ऐसे तबादले सरकारी विभागों में होते हैं। मगर विश्वविद्यालय सरकारी विभाग नहीं होते, उनकी अपनी स्वायत्तता होती है। भले ही सभी विश्वविद्यालय फैकल्टी की भर्ती के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा निर्धारित योग्यताओं और मानदंडों की पालना करते हैं किन्तु प्रत्येक विश्वविद्यालय अभ्यर्थियों से आवेदन आमंत्रित करता है और अपनी चयन समिति के जरिए विभिन्न स्तर के शिक्षकों का चयन तथा उनकी नियुक्तियां करता है। ऐसा नहीं होता है कि किसी अभ्यर्थी का चयन एक विद्यालय करे और चयनित हुए की नियुक्ति किसी और विश्वविद्यालय में हो जिसने उनका चयन नहीं किया था। विश्वविद्यालयों के शिक्षकों का चयन किसी कॉमन सलेक्शन प्रोसेस से भी नहीं होता। प्रत्येक विश्वविद्यालय की अपनी प्रक्रिया होती है। मगर जब विश्वविद्यालयों का निर्माण दलगत राजनीति के अखाड़े के पहलवान करें तब ऐसा ही होता है। विश्वविद्यालयों की बदली के समय यदि उन्हें फिर से नए विश्वविद्यालय की चयन समिति के सामने जाना पड़ता तो संभव है कुछ की अलमारियों से कुछ कंकाल मिलते। कंकाल का एक मामला इसलिए खुल गया कि किसी ने एक करामाती शिक्षक की शिकायत कर दी थी। उस शिकायत पर विधिवत स्वतंत्र जांच हुई, शिक्षक को सुना गया और जांच में फैसला उसकी सेवाएं समाप्त करने का आया। अब इस नए विश्वविद्यालय के प्रबंध बोर्ड की बैठक इसलिए टाली जा रही है ताकि उस शिक्षक को फिर से सुनवाई का मौका देकर हुई जांच की रिपोर्ट उसमें नहीं रखी जा सके। छात्रों से बात करें तो पता चलता है कि इस विश्वविद्यालय में यदि कुछ समझदारी की पढ़ाई हो रही है तो वह वहां लगायी गई एडजंक्ट.फ़ैकल्टी से हो रही है। मगर स्थाई फ़ैकल्टी के लोग एडजंक्ट.फ़ैकल्टी को अपना दुश्मन जैसा मानते हैं। पिछले विश्वविद्यालय से आई फ़ैकल्टी की राजनीति करती भी इस नए विश्वविद्यालय को ऐसा नहीं बनने दे रही है जैसा मुख्य मंत्री का सपना है या इसके उद्देश्यों में कहा गया है। कक्ष में एक छात्रा के साथ साथी छात्र की बार बार बदतमीजी के एक मामले ने जब तूल पकड़ लिया तब उद्दंड छात्र को बचाने का आरोप लगते हुए छात्रों ने भारी सभा में स्थाई फेकल्टी के लिए जो कहा उसे सबने सुना। इसी के चलते जब नई कुलपति ने जब कक्षाओं और शिक्षा परिसर में सीसी टीवी के कैमरे लगाने का फैसला सुनाया तो सबसे अधिक विरोध स्थाई फ़ैकल्टी की तरफ से ही हुआ क्योंकि कैमरे लग जाने से यह भी सामने आ जाएगा कि शिक्षक कैसी कक्षाएं ले रहे हैं।

राजस्थान में पत्रकारिता के शिक्षण की राजस्थान विश्व विद्यालय में एक श्रमजीवी पत्रकार डॉ. भंवर सुराणा ने नींव रखी थी जिसे बाद में डॉ. संजीव भानावत ने संसाधनों की मुश्किलों के बावजूद एक ऊंचे दर्जे का विभाग बना कर खड़ा कर दिया। देश का कोई ऐसा कोना नहीं होगा जहां वहां शिक्षा पाकर पहुंचे विद्यार्थी अपना नाम नहीं कमा रहे हों। उसे मजबूत करने की बजाय नया विश्वविद्यालय खोलने की राजनीति ने किसी का भला नहीं किया है यह विश्वविद्यालय देश के ही क्यों राजस्थान के मीडिया और जनसंचार संस्थानों से भी बेगाना बना हुआ है। जिस प्रकार एक मेडिकल विश्वविद्यालय के साथ अस्पताल जरूर जुड़े होते हैं उसी प्रकार पत्रकारिता और जनसंचार के पेशे की शिक्षा और प्रशिक्षण के लिए मीडिया संस्थान इससे औपचारिक रूप से जुड़ें हों इस जरूरत पर कभी किसी ने नहीं सोचा। ऐसे में इस विश्वविद्यालय में दाखिल लेने छात्र क्यों कर आयें!

**–अतिथि संपादक,**
**राजेन्द्र बोड़ा**
**( वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक )**

# "आदि महोत्सव"- 2022 कोटड़ा का रंगारंग आगाज

## देश-प्रदेश की सांस्कृतिक झलक देख अभिभूत हुए पर्यटक

- **भारत की विविधता में एकता का साक्षी बना 'आदि महोत्सव'**
- **पश्चिम बंगाल के नटुआ नृत्य, ओडिशा के सिंगारी नृत्य, गुजरात के राठवा नृत्य, महाराष्ट्र के सोंगी मुखौवटे नृत्य तथा मध्यप्रदेश के गुटुम्ब बाजा नृत्य की प्रस्तुतियों को दर्शक एकटक निहारते रहे**

**"आदि महोत्सव" के पहले दिन भारत के विभिन्न क्षेत्रों से आए लोक कलाकारों ने नृत्य की सामूहिक प्रस्तुती दी।**

**उदयपुर,** (कासं)। विश्व पर्यटन दिवस के अवसर पर जिला प्रशासन, जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग, माणिक्य लाल वर्मा आदिम जाति शोध संस्थान एवं पर्यटन विभाग के तत्वावधान में जिले के सुदूर आदिवासी अंचल कोटड़ा ब्लॉक में 'आदि महोत्सव'- 2022 कोटड़ा का आगाज धूमधाम से हुआ। संभागीय आयुक्त राजेंद्र भट्ट व जिला कलेक्टर ताराचंद मीणा ने विधिवत रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर इस रंगारंग महोत्सव का आगाज किया।

पर्यटन के क्षेत्र में विश्व पटल पर अपनी विशिष्ट पहचान रखने वाले उदयपुर में आयोजित यह आदि महोत्सव भारत की विविधता में एकता की विशेषता का साक्षी बना। इस महोत्सव में मेवाड़ की लोक संस्कृति के साथ भारत के विभिन्न क्षेत्रों से आए लोक कलाकारों ने अपनी प्रस्तुतियों से सभी को मंत्रमुग्ध किया। भारत के विभिन्न प्रांतों से आए लोक कलाकारों ने अपने पारंपरिक लोक वाद्य यंत्रों एवं अपने प्रदेश की पौराणिक कथाओं व संस्कृति पर आधारित कार्यक्रमों की प्रस्तुति से माहौल को रंगीन बना दिया।

समारोह में जिला पुलिस अधीक्षक विकास शर्मा उदयपुर सांसद अर्जुन लाल मीणा. झाडोल विधायक बाबूलाल खराडी, समाजसेवी लालसिंह झाला, लक्ष्मीनारायण पंड्या, सुनील भजात, रामलाल गाडरी सहित विभिन्न स्थानीय जनप्रतिनिधि विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं देश विदेश से आए पर्यटक मेहमान और बडी संख्या में आमजन मौजूद रहे। महोत्सव में देश के विभिन्न क्षेत्रों से आए कलाकारों ने अपने क्षेत्र की उत्सवी परम्पराओं और संस्कृति को समेटे नृत्यों की प्रस्तुतियां देकर उपस्थित दर्शकों को देश के गौरवशाली इतिहास का परिचय कराया। इस दौरान पश्चिम बंगाल के नटुआ नृत्य, ओडिशा के सिंगारी नृत्य, गुजरात के राठवा नृत्य, महाराष्ट्र के सोंगी मुखौवटे नृत्य तथा मध्यप्रदेश के गुटुम्ब बाजा नृत्य की प्रस्तुतियों को दर्शक एकटक निहारते रह गए और भारतवर्ष की विभिन्न परम्परागत नृत्यशैलियों को देख स्वयं को गौरवान्वित महसूस किया। इस दौरान राजस्थान के पारंपरिक गैर नृत्य, घूमर नृत्य, स्वांग व भवई सहित आदिवासी व जनजाति क्षेत्रों के पारंपरिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां भी दी गई।

कार्यक्रम में आए अतिथियों और मेहमानों का तिलक लगाकर, माला पहनाकर व गुड खिलाकर स्वागत किया। अतिथियों और मेहमानों के आगमन के दौरान मुख्य द्वार से दोनों तरफ देश के विभिन्न प्रांतों से आए कलाकारों ने अपने लोक संस्कृति का परिचय देते हुए अगवानी की। इस अवसर पर देशी-विदेशी पर्यटकों ने ठेठ देशी खाने यथा मक्का व बाजरे की रोटी, राबडी, साग आदि का जायका लिया और शुद्ध खाने का रसास्वादन कर रोमांचित हो उठे।

आदि महोत्सव में भारतीय लोक कला मंडल के सांस्कृतिक प्रकाशन रंगायन का विमोचन अतिथियों के हाथों किया गया। महोत्सव के शुभारंभ अवसर पर रस्साकसी, रुमाल झपट्टा, मटका दौड़ 50 मीटर सहित अन्य खेलों का आयोजन स्थानीय महिला पुरुषों व देशी विदेशी मेहमानों के लिए किया गया। इसके अलावा महोत्सव में पर्यटकों के लिए पानरवा में एडवेंचर स्पोर्ट्स, ट्रेकिंग, ट्री वॉक एवं नाल सान्दोल में जीप लाइन, वोटर रोलिंग जैसे एड्वेंचर स्पोर्ट्स का भी आयोजन किया गया जिससे पर्यटकों का उत्साह देखते ही बन रहा है।

उत्सव के तहत आयजनक गतिविधियों के लिए राजीविका कोटड़ा के 124 महिला समूहों को एक करोड पच्चीस लाख रुपए का क्रेडिट लिंकेज का चेक सौंपा। संभागीय आयुक्त सहित अन्य अतिथियों ने चेक सौंपते हुए महिला समूहों को बधाई दी। आदि महोत्सव के पहले दिन विदेशी पर्यटकों ने यहां पर जनजाति अंचल के व्यंजनों का लुत्फ उठाया और आदिवासी कला संस्कृति की झांकी देखकर मोहित हो उठे।

# 'अधिकारों को लेकर जागरूक नहीं होने पर कोर्ट बचाव की पहल नहीं कर सकता'

- **वेतन विसंगति को लेकर दायर याचिका खारिज**

**जोधपुर,** (कासं)। राजस्थान उच्च न्यायालय ने वेतन विसंगति को लेकर एक कर्मचारी की ओर से चालीस वर्ष बाद दायर की गई एक याचिका को खारिज कर दिया। साथ ही हाईकोर्ट ने टिप्पणी की कि यह विधि का स्थापित सिद्धांत है कि यदि कोई अपने अधिकारों को लेकर जागरूक नहीं है तो कोर्ट उसके बचाव की पहल नहीं कर सकता। अपने अधिकारों की रक्षा के लिए सही समय पर बोलना पड़ता है न कि समय गुजर जाने के बाद।

बीकानेर निवासी आनंद शंकर को मई 1971 में जोधपुर विद्युत वितरण निगम में केज्यूअल लेबर लगाया गया। वर्ष 1974 में उसे हैल्पर सैकंड के रूप में नियमित कर दिया गया। पंद्रह वर्ष की संतोषजनक सेवा के बाद उसे पदोन्नत कर वर्ष 1991 में उसे एसएसए थर्ड ग्रेड प्रदान किया गया। इस बीच वर्ष 1974 में आनंद शंकर के जूनियर मोहम्मद हनीफ को वर्ष 1992 में हाईकोर्ट के आदेश से हैल्पर की ग्रेड 2 दे दी गई। इसे आधार बना आनंद शंकर की ओर से अपील दायर कहा गया कि उसे भी एक अप्रैल 1972 से हैल्पर की ग्रेड 2 प्रदान की जाए।

**न्यायाधीश माथुर ने की सुनवाई :-** न्यायाधीश कुलदीप माथुर ने याचिका की सुनवाई करते हुए कहा कि चालीस वर्ष से अधिक विलम्ब से याचिका दायर की गई है। स्वयं के रिटायर्ड होने के चार साल बाद अब उसे यह विसंगति याद आई। याचिकाकर्ता ने जिस मोहम्मद हनीफ का उदाहण दिया है, उसके साथ भी उसकी तुलना नहीं की जा सकती। उसका मामला पूरी तरह से अलग था। जांच में यह तथ्य सामने आया कि मोहम्मद हनीफ पहले से ग्रेड 1 में कार्यरत था।

# पर्यटन दिवस पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन

## लोक कलाकारों के दल ने कच्छी घोड़ी नृत्य सहित अन्य कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां दीं

- **जिला कलेक्टर ने किया चित्रकला प्रदर्शनी का शुभारंभ**

**बून्दी,** (निसं)। विश्व पर्यटन दिवस के उपलक्ष में मंगलवार को सुखमहल में विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुए। कार्यक्रम में जिला कलेक्टर डॉ. रविन्द्र गोस्वामी ने शिरकत की। जिला प्रशासन, पुरातत्व विभाग एवं पर्यटन विभाग की ओर से आयोजित कार्यक्रम में लोक कलाकारों के दल ने कच्छी छोड़ी नृत्य सहित अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों की बेहतरीन प्रस्तुतियां दी।

इस अवसर पर विदेशी मेहमानों का अतिथि सत्कार भी किया गया। पर्यटन विभाग द्वारा सुख महल पर आने वाले देशी विदेशी पर्यटकों का बूँदी का पर्यटन साहित्य भेंट कर स्वागत किया गया। विश्व पर्यटन दिवस के अवसर पर पुरातत्व स्थलों रानीजी की बावडी, चौरासी खम्बों की छतरी सुखमहल में देशी-विदेशी पर्यटकों के निःशुल्क प्रवेश की सुविधा रही।

चित्र प्रदर्शनी का शुभारंभ, चित्रकृतियों को मिली सराहना : विश्व पर्यटन दिवस के अवसर पर सुखमहल परिसर में बूंदी ब्रश संस्थान के कलाकारों की ओर से बूंदी के पर्यटन स्थलों को लेकर लगाई गई चित्रकला प्रदर्शनी का जिला कलक्टर ने फीता काटकर विधिवत शुभारंभ किया। प्रदर्शनी अवलोकन के दौरान जिला कलक्टर ने संस्थान के कलाकारों द्वारा प्रदर्शित चित्रकृतियों की सराहना की। उन्होंने कहा कि नवम्बर माह में आयोजित 'बूंदी महोत्सव' में संस्थान के कलाकार अपनी बेहतरीन कला का प्रदर्शन कर बूंदी बाईपास पर चित्रकृतियां बनाकर इसे आकर्षक स्वरूप प्रदान करें।

चित्रकला प्रदर्शनी में सुनील जांगिड़, विजय सिंह सोलंकी, भवंर सिंह सोंलकी, प्रियांश सोनी, युक्ति शर्मा, वंशिका सिंह, तरू जैन, गार्गी श्रृंगी, किरण शर्मा, युवराज सिंह एवं नंद प्रकाश शर्मा 'नंजी' की चित्रकृतियों को प्रदर्शित किया गया है। इस अवसर पर पूर्व राजपरिवार सदस्य वंशवर्धन सिंह, सहायक पर्यटन अधिकारी प्रेमशंकर सैनी, बलभद्र सिंह, बूंदी ब्रश संस्था अध्यक्ष सुनील जांगिड़, सचिव विजय सिंह, ओमप्रकाश 'कुक्की', पुरातत्व विभाग के जगदीश वर्मा आदि मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन बूंदी विकास समिति सदस्य पुरूषोत्तम लाल पारीक ने किया।

# लम्पी ग्रस्त गायों के लिए काम कर रहा मूक बधिर विद्यालय

**खाटूश्यामजी,** (निसं)। खाटूश्यामजी-रींगस रोड पर स्थित मूक बधिर मंदबुद्धि आवासीय विद्यालय के संचालक निरंजन शर्मा द्वारा लम्पी बीमारी से ग्रस्त गायों के इलाज के लिए लगातार प्रयास किये जा रहे हैं।

संस्थान द्वारा पशु चिकित्सक लक्ष्मण सिंह बाजिया के दिशा निर्देशन में गायों के लिए आमजन को निशुल्क दवा वितरण की जा रही है। साथ ही चैन्नई धर्मशाला के पास गायों के लिए एक आईशोलेशन वार्ड भी बना रखा है जहां गायों को लाकर इलाज किया जा रहा है। इसके अलावा आस-पास के गांवों में भी दवाई वितरित की जा रही है। विद्यालय के निदेशक निरंजन शर्मा ने बताया कि आईशोलेशन वार्ड में आवारा घूम रही ऐसी गाय जो लम्पी ग्रस्त हो गई हैं उनको लाकर इलाज किया जा रहा है। प्रतिदिन गौवंश को सेनेटाइजर से नहलाया जाता है तथा तीन चिकित्सकों टीम लगातार निगरानी रखे हुए हैं। इसके अलावा संस्थान द्वारा स्टाल लगाकर आस-पास के गांवों के लिए भी निशुल्क दवा की व्यवस्था की गई है।

उन्होंने बताया कि बहुत से किसान गायों के लम्पी बीमारी होते ही घर से बाहर छोड़ देते हैं। ऐसे में संस्थान ने नया कदम उठाते हुए मोबाइल टीम बनाई है जो उन लम्पी ग्रस्त गायों को घर घर जाकर इलाज करेगी। संस्थान के शर्मा ने बताया कि सैंकड़ों गायों को सतर्कता व दवाओं तथा इलाज से ठीक किया जा चुका है।

**लम्पी बीमारी से ग्रस्त गायों का सैनिटाइजर से उपचार करती टीम।**

## राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

**बुधवार 28 सितम्बर, 2022**

आश्विनी मास, शुक्ल पक्ष, तृतीया तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2079, स्वाती नक्षत्र गुरूवार प्रातः 5:52 तक, वैधृति योग रात्रि 3:06 तक, तैतिल करण दिन 1:58 तक, चन्द्रमा आज तुला राशि में संचार करेगा।

**ग्रह स्थिति:** सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-तुला, मंगल-वृष, बुध-कन्या, गुरू-मीन, शुक्र-कन्या, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज शुक्र वृद्धत्व आरम्भ रात्रि 8:30 से होगा। आज वैधृति पूण्य है। आज से रवि उल अव्वल मु. मास 3 आरम्भ होगा।

**श्रेष्ठ चौघड़िया:** लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:19 तक, शुभ 10:43 से 12:18 तक, चर 3:16 से 4:45 तक, लाभ 4:45 से सूर्यास्त तक।

**राहूकाल:** 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:21, सूर्यास्त 6:14

**मेष**
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी।

**वृष**
मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

**मिथुन**
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। प्रतिष्ठित व्यक्तियों से व्यवसायिक संबंध बनेंगे। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

**कर्क**
परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

**सिंह**
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित उचित सफलता मिल सकती है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी।

**कन्या**
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

**तुला**
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यक्तिगत कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे।

**वृश्चिक**
धार्मिक कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा।

**धनु**
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

**मकर**
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

**कुंभ**
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

**मीन**
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।